One-Day Workshop on "The Importance of Pilgrimage Sites in Indian Culture"

Resource Person- Mr. Madan Mohan Chhabra

On April 25, 2024, a one-day workshop on the topic "The Importance of Pilgrimage Sites in Indian Culture" was held at the conference room of Babu Anant Ram Janta College, Kaul (Kaithal). The event was organized under the chairmanship of Principal Dr. Rishipal and jointly conducted by the Sanskrit Department and the Library Department. The workshop was efficiently coordinated by Dr. Rajiv Kumar Gaba, Dr. Vishambardas, and Dr. Anita Nain.

The chief guest and keynote speaker for the workshop was Mr. Madan Mohan Chhabra, Chairman of the 48 Kos Pilgrimage Monitoring Committee of Kurukshetra. The event began with the chief guest, Principal Dr. Rishipal, and other faculty members paying tribute to the statue of the late Ishwar Singh.

Principal Dr. Rishipal welcomed the chief guest with a bouquet of flowers and introduced him to the audience, highlighting his exceptional talent and significant research work on the pilgrimage sites of Kurukshetra. He emphasized the workshop's main objective of understanding and appreciating our invaluable cultural heritage.

In his address, Mr. Madan Mohan Chhabra introduced the rich cultural heritage of India and provided detailed information on the pilgrimage sites within the 48 Kos of Kurukshetra. He explained how pilgrimage tourism promotes cultural exchange and economic decentralization. For example, pilgrimage sites in mountainous regions, remote deserts, and coastal areas benefit economically from the influx of pilgrims and tourists, which supports local food and daily necessities businesses.

Dr. Vishambardas skillfully conducted the event, and Dr. Anita Nain delivered the vote of thanks. At the end of the workshop, the chief guest was honored with a memento. President of the Management Committee, Chaudhary Tejvir Singh, congratulated everyone for the successful organization of the event.

The workshop saw the attendance of all faculty members and non-teaching staff of the college, contributing to its success.

पंजाब केसरी
FRI,26 APRIL 2024
EDITION: KAITHAL KESARI, PAGE NO. 2

गांव में जागरूकता फैलाने के लिए पंच भी वितरित किए गए।

भारतीय संस्कृति में तीर्थ स्थलों के महत्व पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए प्राचार्य डा. ऋषिपाल।

कौल, 25 अप्रैल (बलवान): बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय कौल के सभागार में प्राचार्य डा. ऋषिपाल की अध्यक्षता में भारतीय संस्कृति में तीर्थ स्थलों का महत्व विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह आयोजन संस्कृत विभाग और पुस्तकालय विभाग के संयुक्त तत्वावधान में डा. राजीव कुमार गाबा, डा. विशम्बर दास एवं डा. अनीता नैन के संयुक्त संयोजन में संपन्न हुआ।

कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में कुरुक्षत्र के 48 कोर्स के तीर्थों की निगरानी कमेटी के अध्यक्ष मदन मोहन छाबड़ा उपस्थित रहे। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि एवं प्राचार्य ने शिक्षकों के साथ हरियाणा विधानसभा के पूर्व स्पीकर स्व. ईश्वर सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके उपरांत महाविद्यालय के प्राचार्य ने मुख्यातिथि का स्वागत किया।

उन्होंने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अपनी अनमोल सांस्कृतिक विरासत को जानना और समझना है। मदन मोहन छाबड़ा ने भारतीय संस्कृति का परिचय देते हुए कुरुक्षेत्र के 48 कोस में स्थित तीर्थ स्थलों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। कार्यशाला में मंच का संचालन डा. विशम्बर दास ने कुशलतापूर्वक किया। धन्यवाद ज्ञापन डा. अनीता नैन ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में मुख्यातिथि को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यशाला में महाविद्यालय के समस्त शिक्षकगण एवं गैर शिक्षक कर्मचारी उपस्थित थे।

भारतीय संस्कृति में तीर्थस्थलों का महत्व विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

करनाल(मेहर सिंह)। बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय कौल, कैथल के सभागार में प्राचार्य डॉ0 ऋषिपाल की अध्यक्षता में भारतीय संस्कृति में तीर्थस्थलों का महत्व विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह आयोजन संस्कृत विभाग और पुस्तकालय विभाग के संयुक्त तत्वावधान में डॉ0 राजीव कुमार गाबा , डॉ0 विशम्बरदास एवं डॉ0 अनीता नैन के संयुक्त संयोजन में संपन्न हुआ। कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में कुरुक्षेत्र के 48 कोस के तीर्थों की निगरानी कमेटी के अध्यक्ष मदन मोहन छाबड़ा जी उपस्थित रहे। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि एवं प्राचार्य महोदय ने शिक्षकों के साथ स्वर्गीय ईश्वर सिंह जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।इसके उपरांत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0ऋषिपाल जी ने मुख्यातिथि महोदय का स्वागत पुष्पगुच्छ देकर किया। उन्होंने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि माननीय मदन मोहन छाबड़ा विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं एवं कुरुक्षेत्र के तीर्थ स्थलों पर विशेष रूप से शोध कार्यों में संलग्न रहे हैं। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अपनी अनमोल सांस्कृतिक विरासत को जानना और समझना है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मदन मोहन छाबड़ा ने भारतीय संस्कृति का परिचय देते हुए कुरुक्षेत्र के 48 कोस में स्थित तीर्थस्थलों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करते हुए बताया कि तीर्थों के माध्यम से पर्यटन संस्कृति को जो प्रोत्साहन मिलता है उसमें एक जगह का आर्थिक संकेन्द्रण; विकेन्द्रण को प्राप्त होता है। यथा- पर्वत प्रदेशों, सुदूर मरुस्थल एवं समुद्र के समीप स्थित तीर्थस्थलों में खान-पान एवं दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति तीर्थयात्रियों अथवा पर्यटकों से प्राप्त हुए धन से हो जाती है। तीर्थों के माध्यम से पर्यटन संस्कृति को जो प्रोत्साहन मिलता है उसमें एक जगह का आर्थिक संकेन्द्रण; विकेन्द्रण को प्राप्त होता है। यथा- पर्वत प्रदेशों, सुदूर मरुस्थल एवं समुद्र के समीप स्थित तीर्थस्थलों में खान-पान एवं दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति तीर्थयात्रियों अथवा पर्यटकों से प्राप्त हुए धन से हो जाती है। कार्यशाला में मंच का संचालन डॉ0 विशम्बरदास ने कुशलतापूर्वक किया ।धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 अनीता नैन ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में मुख्यातिथि को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यशाला में महाविद्यालय के समस्त शिक्षकगण एवं गैरशिक्षक कर्मचारी उपस्थित रहे।